Sukhdev - 18 September

Q - Attempt a critical essay of the Indian Science and Civilization in the light of Alberuni's writings. What merits and drawbacks, do you find in his account? (10 M)

उत्तर - भारत आने वाले यात्रियों में अल - बरूनी का स्थान महत्वपूर्ण है जिसके ग्रन्थ 'किताब - उल - हिन्द' से भारतीय दर्शन विज्ञान, भौतिक विज्ञान के साथ भारतीय समाज परम्पराओं आदि पर भी महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है, विशेषकर भारतीय विज्ञान व दर्शन पर उसके वर्णन को निम्न बिन्दुओं में समझ सकते हैं -

1 - भारतीय समाज के वर्णन के तहत वह जाति व वर्ण व्यवस्था, भारतीय रीति - रिवाज व परम्पराओं तथा भारतीय त्यौहारों आदि का वर्णन करता है, इसके तहत -

a - वह जाति व्यवस्था से संबंधित रीति - रिवाजों, प्रथाओं का वर्णन करता है, इसके तहत वह चातुर्वर्ण व्यवस्था की ~~उत्पत्ति~~ उत्पत्ति 'पुरुष सूक्त' के आधार पर करने के साथ चारों वर्गों के बीच की दूरी, सामाजिक मेल - जोल व भोजन प्रतिबंधों पर प्रकाश डालता है हालांकि वह वैश्य शूद्र के बीच अधिक अंतर न होने की बात करता है

Scanned by CamScanner

6- वह बाह्य जातियों के रूप में अन्त्यजों, अछूतों जैसे - हाडि, डोम, चण्डालों का भी वर्णन करता है

7- भारतीय रीति- रिवाज परम्पराओं, त्यौहारों के तहत वह व्रतों, पान खाने, महिलाओं की स्थिति का भी वर्णन करता है जिसके तहत वह बाल विवाह, विधवाओं की दयनीय स्थिति तथा सती प्रथा का वर्णन करता है,

8- भारतीय विज्ञान के तहत वह ज्योत विज्ञान, माप-तौल के विभिन्न पैमानों, गणित, रसायन व कीमियागरी आदि का वर्णन करता है। इसके तहत वह वराहमिहिर, आर्यभट्ट की प्रशंसा करता है किन्तु वर्तमान (11वीं सदी) में भारतीयों के ज्ञान की जड़ता तथा भारतीयों द्वारा बाह्य व नवीन ज्ञान को ना स्वीकारने के लिए उनकी आलोचना भी करता है,

अलबरूनी अरबी 'मुतालिजा' परम्परा का विद्वान था, इसी कारण उसके ग्रन्थ में निम्न विशिष्टताएं दिखती हैं -

1- पूर्वाग्रह से उठकर निष्पक्षता का प्रयास, इसके तहत उसने संस्कृत सीखी, प्राप्त मौखिक, लिखित भारतीय ग्रन्थों तथा आंखों देखी व्यवस्था के आधार पर लिखने का प्रयास किया

Scanned by CamScanner

2- विशिष्ट शैली का प्रयोग जिसके तहत वह अध्याय का प्रारम्भ प्रश्न से करता है, तत्पश्चात् विद्यमान सांस्कृतिक परम्पराओं का वर्णन करता है, फिर उसकी अन्य संस्कृतियों के साथ तुलना करता है तथा अपना दृष्टिकोण भी रखता है। इस प्रकार उसका परिदृश्य आलोचनात्मक होने के साथ सुधारवादी था

3- वह अपनी भाषा, धर्म व संस्कृति की सीमाओं से परिचित था और इसे स्वीकारता भी है।

हालांकि इसके बावजूद उसकी सोच की निम्न सीमाएं हैं-

1- भारतीय राजनैतिक इकाई व आर्थिक स्थिति का अधिक वर्णन नहीं

2- विवरण उत्तर भारत तक सीमित, पूर्वी भारत की भी ज्यादा जानकारी नहीं

3- अध्ययन के स्रोत द्वितीयक, अधिकांश विवरण पुस्तकों, ब्राह्मण ग्रन्थों पर आधारित

4- अल बरूनी के कई विवरण अन्य स्रोतों से जुड़ते नहीं होते जैसे कि- अल बरूनी की धार्मिक ज्ञान की आलोचना, भारतीय शिल्प कला व मूर्तियों पर लागू नहीं होती।

Scanned by CamScanner

5- परिस्थितियों का सामान्यीकरण करने की प्रवृत्ति

6- कई बार वह अरब अथवा ग्रीक ज्ञान को भारतीय ज्ञान-विज्ञान पर श्रेष्ठता प्रदर्शित करते नजर आता है।

हालांकि उक्त सीमाओं के बावजूद अल-बरुनी का विवरण समकालीन समाज, संस्कृति, धर्म व विज्ञान की जानकारी का अमूल्य स्त्रोत है।

Scanned by CamScanner